

चित्र आगे जाने के लिए पृच्छती है क्या हुआ था अनुराग चित्र को सब कुछ बताते हुए कहता है सब कुछ ठीक चल रहा था पर फिर एक दिन अचानक तो युग को लेकर यहां पर टपक पड़ी जब तुने ग्रेवार्ड कोठी में कदम रखे थे उसी वक्त तेरी आंखों और तेरे जुड़े को देखकर मुझे पता चल गया था कि तू एक डायन है मैं तो बड़ा खुश था यह बात जानकर कि चलो मेरे वंशज अनुराग में डायन से शादी करी है आखिर डायनासोर तो हमारा पुराना रिश्ता रहा है मेरी जान भी तो एक डायन नहीं बचाई थी अनुराग की सारी बातें सुनती रहती है उसे कुछ नहीं करती मैं सोच लिया था कि मैं तुझे ग्रेवार्ड कोठी में नहीं रहने दूंगा क्योंकि मुझे पता था कि तुम मुझे मेरे मकसद को पानी से रखेगी इसलिए मैंने तेरे बने पोक्लेन का खराब होना आईने में तुझे अपना दायां रूप देखना यह सब यूं ही नहीं हो रहा था वह सब मैंने किया था ताकि तू डर कर भाग जाए पर तू कहा डरने वाली थी तुम एक दिन वंशज की जो तेरी उल्टा तुझे तो मुझ पर शक होने लग गया कि मैं अनुराग नहीं बल्कि कोई और ही हूं तू यहां ग्रेवार्ड कोठी से जाने की जगह यहीं पर बस कराई गई थी कि तू अपने साथ अनुराग को लेकर जाएगी उसके बिना नहीं जाने वाली पर मैं यहां से कैसे जा सकता था अपने मकसद में कामयाब हुए पड़ता है यहां से भागने की कोई जरूरत नहीं है हो गया हीरे के चारों तरफ तोड़ने के लिए तो उसे वक्त मुझे अपनी शक्तियों से पता चला की डायन वंशी रक्षा कवच को तोड़ा जा सकता है डायन के जरिए उसे डायन को कुछ करने की जरूरत नहीं है बस उसे टाइम का स्पर्श काफी है और फिर उसके बाद वह डायन पंछी रक्षा कवच टूट जाएगा यह बात पता चलते ही मैं चक्रव्यूह बनाना शुरू कर दिया कि किस तरह से मैं तुझे उसे हीरे के पास पहुंचा हूं मैं तेरे हाथ मिलाकर नहीं दे सकता था ना आखिर मुझे भी तो झटका लगता था उसके ऊपर जो बना दिया था चित्र तक पहुंचा दिया रानी के साथ अनुराग से कहती है क्या कहा अनुराग हामी भरते हुए कहता है हां चित्र वो रास्ता तुने खुद मुझे पता है अक्सर इंसानों को लगता है कि उनकी बातें कोई नहीं सुनता है पर वह भूल जाता है की दीवारों के भी कान होते हैं तुझे याद है वह दिन जब मैं युक् स्कूल लेने के लिए गया था और तूने प्रशांत को बुलाया था सिलेंडर लेने के बहाने से चित्र अपने गुस्से पर काबू करते हुए कहती है 4 दिन में कैसे भूल सकती हूं भजन उसी दिन तो तुने मुझ पर झूठा आरोप लगाए थे अनुराग मुस्कराते हुए कहता है दामन पर कलंक लगाने के लिए बोल दिया था वह क्या है ना जब औरत के दामन पर कलंक लग जाता है तो वह किसी से नजर नहीं मिला हमेशा क्या होता है और मैं भी यही चाहता था कि तू अपनी नजरों में कभी मुझसे चित्र अनुराग कोसी के लेजा में जवाब देते हुए कहती है अपनी नजरों में तुम्हें तब गिरती है ना जब मैं वैसा काम किया होता जो औरत सती सावित्री होती है वह कभी अपनी नजरों में नहीं गिरती है बल्कि जो लोग उसके दामन पर झूठ कलंक लगते हैं वह लोग कभी खुद से अपनी नजरे नहीं मिल पाते हैं हमेशा शर्मिंदगी के साथ जीते रहते हैं जीते के अंदर ही अंदर मारते रहते हैं अनुराग को गुस्सा तो आता है पर वह जैसे तैसे करके अपने गुस्से पर कंट्रोल कर लेता है उसे दिन मैं तेरी और प्रशांत के बीच की सारी बातें सुन ली थी मुझे पता चल गया था कि तूने बता दिया है कि अनुराग भक्षण का वंशज है पर उसके बाद भी मैं तेरे साथ वही नाटक जानकर भी अनजान बनने का नाटक जो तू मेरे साथ शुरू से खेलने आ रही है उसे दिन तेरी और प्रशांत की बातें सुनकर मुझे पता चल गया था कि तुम यक्षिणी से मिलना चाहती है तू प्रशांत से भी यही कह रही थी फिर क्या था बस मुझे वह चीज मिल गई थी जिसकी मुझे जरूरत थी मुझे पता चल गया था कि चक्रव्यूह रचना की शुरुआत कहां से करनी थी मुझे पता था कि तू यक्षिणी से मिलने के लिए घाट पर अमावस्या पूर्णिमा की रात जरूर जाएगी तुने सारे सवालियों के जवाब दो जो बता रहा हूं वह सुनते जाओ वरना वह भी नहीं बताऊंगा ही रहती है अनुराग फिर कहता है जैसा मैंने सोचा था वही हो रहा था तू यक्षिणी को देखने के लिए अमावस्या की रात ग्रेवार्ड कोठी से निकली थी मैंने सोचा था कि जब तू घाट पर आएगी उसी वक्त मैं तुझे अपना असली रूप दिखा दूंगा पर तू तो इतनी डरपोक निकली की टाइल से सब कुछ होते हुए देख रही थी तुने कुछ किया नहीं तुझे क्या लगता है चित्र उसे दिन तिल पर से तू मुझे देख रही थी नहीं चित्र बल्कि तो वह देख रही थी जो मैं तुझे दिखाना चाहता था मुझे पता था कि तुम मुझ पर नजर रख रही है सिर्फ तू ही नहीं कौन कौन मुझ पर कहां से नजर रख रहा है मुझे सब पता है कि अनुराग जरूर रंजन के बारे में बात कर रहा था आखिर वही तो अनुराग फिर चित्र से बोल पड़ता है मुझे लगा था कि एक नई अमावस्या पूर्णिमा की रात तू घाट पर जरूर आएगी ताकि मैं तुझे अपना असली रूप दिखाता हूं चित्र हैरानी के साथ अनुराग से पृच्छता है तुम मुझे अपना असली रूप दिखाना चाहते थे पर क्यों अनुराग मुस्कराते हुए कहता है कि अपने चक्रव्यूह का दूसरा चरण शुरू कर सके और पूर्णिमा की रात निकल जाने के बाद भी जब तक नहीं आए तो फिर पूर्णिमा अपने ओप वहां पर छूट गया था नहीं चित्र वह छूता नहीं था बल्कि मैंने उसे छोड़ा था मैंने जानबूझकर उसे रात को ठेका गेट खुला रख दिया था और जैसा मैंने सोचा था तुम मेरी कमरे के अंदर भी आई और फिर जानबूझकर तुझ पर गुस्सा निकालते हुए मैंने तुझे अपनी पीली आंखें दिखाई ताकि तू पूरी तरह शोर हो जाए कि मैं यानी कि अनुराग ही वह काला साया है जो घाट पर यक्षिणी की जगह शिकार करता है चित्र परेशान होते हुए कहती है तुमने यह सब जानबूझकर किया पर क्यों अनुराग बड़ी रब के साथ जवाब देता है क्योंकि मुझे पता था कि जिस दिन तुझे यह बात पता चलेगी कि अनुराग ही कलश है तो तू फिर से प्रशांत के पास बड़ा कोई रास्ता है चित्र अनुराग को गुस्से के साथ घूमने लग जाती है अनुराग फिर बोल पड़ता है फिर जैसा मैंने सोचा था वही हुआ उसने तुझे बात ही बातों में बताया कि मैं पणजी गांव गया था उसी के बाद से मैं बदला हूं मुझे लगा था कि यह बात जानने के बाद तू पंचम गांव जरूर जाएगी पर ऐसा हुआ ही नहीं दो तीन दिन गुजर गए तो कृपया मेरे समझ नहीं आ रहा था कि आखिर सब कुछ जाने के बाद भी तो पंचम गांव क्यों नहीं जा रही थी मेरे सन्न का बांध टूट चुका था और मैं जान गया था कि चक्रव्यूह रचना से ही सब कुछ नहीं होने वाला था जब तक तुझे की जानकारी सरकारी वाला शुरू कर दिया जाता है कि सपने में नदी के पास किचन के अंदर पर हमले हुए थे अनुराग उन हम लोग की बात कर रहा था अनुराग फिर चित्र से बोल पड़ता है मैं तो तुझे और युग को बस चलाना चाहता था पर तुने गुस्से में आकर मेरी कहानी चला दी वह कहानी जो मेरी जिंदगी थी फिर मैं अपनी कहानियों का अपमान कैसे कर सकता था चित्र अनुराग को बीच में डुबते हुए कहती है क्या कहा कहानी तेरी जिंदगी है तू कब से अनुराग बन गया बच्चा तुझे कहानी कब से पसंद आने लगी चित्र के सवाल का जवाब देते हुए कहता है मैं अनुराग नहीं हूं चित्र ना कभी बनना चाहता है वह भी बस अपने मकसद के लिए कहानी खा गई र तू एक और धोखा मैं यक्षिणी की नहीं बल्कि अपनी कहानी लिख रहा था यानी भक्ति सागर की कहानी चित्र अपनी दोनों भावे ऊपर उठाते हुए कहती है तू अपनी कहानी लिख रहा था पर क्यों अनुराग पलट कर कहता है क्योंकि मैं अपना इतिहास खुद अपने हाथों से लिखना चाहता था ताकि मेरे जाने के बाद भी मेरे वंशज मुझे याद रखें अनुराग की तरह भूल न जाए तुझे पता है कहानियों की सबसे अच्छी बात क्या है और शैतान सबको मरना है पर कहानी कभी नहीं मरती है वह अमर होती है और मैं भी अपनी कहानी को अमर बनाना चाहता था इसलिए यकीन की कहानी की आर्मी में अपनी कहानी लिख रहा था शिकार करता है ठीक उसी तरह कहानी का नाम क्योंकि अगर मैं ना होता तो यक्षिणी की कहानी कभी शुरू नहीं होती यक्षिणी की कहानी में यक्षिणी नायिका जरूर है पर मैं उसे कहानी का खलनायक हूं वह खलनायक जो नायिका से भी बड़ा है चित्र मन ही मन पृच्छताते हुए कहती है उस दिन वह कहानी चलने से पहले मैंने बस वही सीन पड़े थे जो मेरे साथ घाटे थे काश मैं कहानी चलने से पहले वह पूरी कहानी होती तो शायद मुझे पता होता की भक्ति पर फिर मेरा काम कौन करता कौन वो रक्षा कवच तोड़ता इसलिए मैंने सोचा चलो तुझे बचा ही लेता हूं पर जब मैं तुझे बचाने आ ही रहा था तब वह यश रंजन वहां पर टपक पड़ा और उसने तुझे बचा लिया बताओ वह खुद तो अपने

आप को श्राप से बचा नहीं पाया आया बड़ा तुझे बचाने के लिए उसे इस बात का जरा सा भी डर नहीं था कि मैं कोठी के अंदर हूँ और उसे मार सकता हूँ वह तो बड़ी बहादुरी के साथ तुझे बचा रहा था बिना किसी लड़की के अंदर मरदान की जाती है कितना बड़ा भी फोटो नहीं होना चाहता है मुझे कितना गुस्सा आ रहा था मैं क्या बताऊँ मेरे मन में तो आया मैं इस सज्जन को मार दूँ फिर जब मैं तेरे और उसके बीच की बातें सुनी चला कि वह तो मेरा काम आसान कर रहा है किसी न किसी तरह से वह तुझे पणजी गांव जाने के लिए कह रहा है चित्र अनुराग को बीच में टूटे हुए कहती है इसका मतलब वह राजन भी तेरे साथ मिला हुआ है अनुराग नाम में अपना सिर हिलाते हुए कहता है नहीं नहीं मैं उसे अपने साथ मिलकर क्या करूँगा मैं मामूली इंसानों को अपनी सेनानी शामिल नहीं करता हूँ किस काम का जिसके पास उसकी शक्तियाँ ही ना हो उसकी शक्ति के लिए मजबूर कर दिया था एकदम सदियों से है पुरानी यह लक्ष्मी की कहानी